तृतीय संस्करण

ओ३म्

प्रार्थना प्रदीप

आर्य समाज, नैनीताल

विश्व की प्राचीनतम आर्य समाज

स्थापना वर्ष १८७४ ई० (सत्यधर्म प्रकाशनी सभा के नाम से)

दयानन्दाब्द १८४ वि० सम्वत २०६२

ई० २००५

ओ३म है जीवन हमारा, ओं प्राणाधार है।
ओ३म है कर्त्ता विधाता, ओं पालनहार है।
ओ३म है दुःख का विनाशक, ओं सर्वानन्द है।
ओ३म है बल तेजधारी, ओं करूणाकन्द है।।
ओ३म सबका पूज्य है, हम ओंम् का पूजन करें।
ओ३म ही के ध्यान से हम शुद्ध अपना मन करें।।
ओ३म के गुरू मन्त्र जपने से, रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ेगी, धर्म में होगी लगन।।
ओ३म के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जाएगा।
अन्त में यह ओंम् हमको मुक्ति तक पहुचाएगा।।

प्रातःकालीन मंत्र

ओ३म् प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रा वरूणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रूद्रं हुवेम।।१।।

ज्ञानरूप प्रभु अग्नि, और है इन्द्ररुप ऐश्वर्य-निधान।
विघ्नविनाशक वैभवदाता, सर्वोपरि सुमहिमावान्।
सर्वस्नेही मित्ररुप वह वरुणरुप वरणीय महान्।
न्याय-विधाता, दुष्कर्मों का करता सुस्थिर दण्डविधान।
सूर्य चन्द्र उत्पादक वह ही बना अश्विनी प्राण अपान।
धन सम्पत् सौभाग्यप्रदाता सेवनीय जो भग भगवान्।
पोषक पूषारुप वही प्रभु ब्रह्मणस्पति ज्ञान-निधान।
सोमरूप में सुधानिधि वह दण्डप्रदाता रुद्र महान्।
सभी अनन्त गुणों से भूषित उस प्रभुवर को ध्यावें हम।
उषाकाल शुभ बेला में उससे अनन्त वर पावें हम।

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्त्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह।।२।।

विजयशील ऐश्वर्यप्रदाता तेजपुञ्ज सब लोकाधार।
सर्वोत्पादक दुरित-विनाशक जो सर्वज्ञ नित्य अविकार।
सर्वप्रकाशक सबका स्वामी सेवनीय अति सौम्य उदार।
उषाकाल में उस प्रभुवर की करें स्तुति हम बारम्बार।

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृवन्तः स्याम।।३।।

सेवनीय प्रभु सत्प्रेरक वह नित सन्मार्ग-प्रदर्शक हो।
सकल सत्य ऐश्वर्य-प्रदाता पूर्णकाम वर वर्षक हो।
स्वच्छ सुमति दे पुण्यधारिणी, करे सुखद ऐश्वर्य प्रदान।
उत्तम पशुधन सहित हमें दे वीर मनस्वी नर सन्तान।

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम।।४।।

हे वर वर्षक सर्वप्रदाता! दो हमको यह शुभ वरदान।
करें सदा पुरुषार्थ, रहें सब समयों में शुचि मन धनवान्।
परम सुपूजित प्रभुवर तुम करते अनन्त ऐश्वर्य प्रदान।
सुपथ-प्रदर्शन देवजनों का मिलें सुमति संग सुखद महान्।

भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तंत्वा भग सर्व इज्जोहवीति स-नो भग पुर एता भवेह।।५।।

हे जगदीश्वर! सर्वसुखद! हे पूज्य! सकल ऐश्वर्य-निधान!
सब धर्मज्ञ देवजन करते तेरा श्रद्धामय गुणगान।
तुम्हीं अग्रणी शुभ कर्मों के, तुम ही हो आदर्श महान्।
पाकर सब ऐश्वर्य करें हम तन, मन, धन से जन-कल्याण।

ईश्वर स्तोत्र

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।।१।।

मात तुही गुरु तात तुही, मित भ्रात तुही धन-धान्य हमारो।
ईश तुही जगदीश तुही, मम शीश तुही प्रभु राखन हारो।।
राव तुही उमराव तुही, सद्भाव तुही प्रभु राखन हारो।
सार तुही, करतार तुही, घरबार तुही परिवार हमारो।।

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय, नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय।
नमोऽद्वैत तत्वाय मुक्ति प्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय।।२।।

नमस्ते निराकर निर्गुण निरुपम नमस्ते शिवं सत्य सुन्दर स्वरूपम्। नमस्ते अगोचर अगम ओजदायक, नमस्ते निरंजन निगम- नीतिनायक।। नमस्ते महेश्वर महा मोक्षदाता, नमस्ते विभू विश्वव्यापी विधाता। नमस्ते सदा सच्चिदानन्द स्वामी, नमस्ते नियन्ता 'भवानी' नमामी।।

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम्।
त्वमेकं जगत्कर्तृ पातृप्रहर्तृ त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम्।।३।।

हे वन्दनीय ईश्वर! तेरी शरण में आया।
तू है स्वयं प्रकाशित, तेरी त्रिलोक माया।।
जग के तुम्हीं जनक हो, पालक विनाशकारी।
हे नाथ अब दया कर सुधि वेग लो हमारी।।

भयानां भयं भीषणं भीषणानां, गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम्।
महोच्चैः पदानां नियन्तृत्वमेकं परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम्।।४।।

भीषण तुझसे भीत और भय भी खावे।
जीवन को गतिशील रसज्ञ पवित्र बनावे।।
सर्वोपरि सर्वेश सच्चिदानन्द स्वरुपम्।
रक्षण के रखवार सभी दिव्य अनूपम्।।

वयं त्वां स्मरामो वयं त्वां भजामो, वयं त्वां जगत्साक्षिरूपं नमामः।
सदेकं निधानं निरालम्बमीशं भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजामः।।५।।

सुमिरन भजन साधना द्वारा तुमसे नेह लगाऊँ।
घट-घट व्यापी की छाया में प्रेम मार्ग पर आऊँ।।
एक मात्र अवलम्ब समीक्षा है तू धामम दाता।
तेरे नाम निगम नौका से भव सागर तर जाता।।

व्रत मंत्र

ओ३म्। अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि।।६।।

हे व्रतों के स्वामी परमेश्वर आप सत्य धर्मादि का पालन करने वाले हो हम भी पूर्वोक्त व्रतों की क्रिया करने लगे हैं। कृपा करो हम सफल हों और असत्य को त्याग कर सत्य को अपनाते रहें।

ओ३म् असतो मा सद्गमय। ओ३म् तमसोमा ज्योतिर्गमय। ओ३म् मृत्योर्मा अमृतं गमय।।७।

हो असत् से दूर भगवन्! सत्य का वरदान दो।
दूर कर द्रुत तिमिर भगवन्!, शुभ्र–ज्योति विहान दो।
मृत्यु बन्धन से हटा, अमरत्व हे भगवान् दो।
प्रकृति–पाशों से छुड़ा आनन्द–मधु का पान दो।।

सन्ध्या (ब्रह्म–यज्ञ)

गुरु–मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।। (इस मन्त्र से शिखा बांधें)

निम्नलिखित मन्त्र से परमेश्वर की प्रार्थना करके तीन बार आचमन करें :-

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्रवन्तु नः।।

सर्वव्यापक परमेश्वर मनोवांछित सुख और पूर्णानन्द की प्राप्ति के लिए हमको कल्याणकारी हो और हम पर सब ओर से सुख की वृष्टि करे।।१।।

अथेन्द्रियस्पर्शमन्त्राः

ओ३म् वाक् वाक्। इस मन्त्र से

ओ३म् प्राणः प्राणः। इससे दक्षिण और वाम नासिका के छिद्र।

ओ३म् चक्षुः चक्षुः। इससे दक्षिण और वाम नेत्र।

ओ३म् श्रोत्रम् श्रोत्रम्। इससे दक्षिण और वाम कर्ण।

ओ३म् नाभिः। इससे नाभि।

ओ३म् हृदयम्। इससे हृदय।

ओ३म् कण्ठः। इससे कण्ठ।

ओ३म् शिरः। इससे सिर।

ओ३म् बाहुभ्यां यशोबलम्। इससे दोनों भुजाओं के मूल स्कन्ध।

ओ३म् करतलकरपृष्ठे। इससे दोनों हाथों के ऊपर तले स्पर्श करें।

हे दयानिधे ! आप मेरी इन्द्रियों, अर्थात् शिर, नेत्र, कण्ठ, हृदय, नाभि, पांव आदि को पवित्र करके बलवान् और यशस्वी कीजिए।

अथ मार्जनमन्त्राः

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि। इस से शिर पर।

ओ३म् भुवः पुनातु नेत्रयोः। इस से दोनों नेत्रों पर।

ओ३म् स्वः पुनातु कण्ठे। इस से कण्ठ पर।

ओ३म् महः पुनातु हृदये। इस से हृदय पर।

ओ३म् जनः पुनातु नाभ्याम्। इस से नाभि पर।

ओ३म् तपः पुनातु पादयोः। इस से दोनों पगों पर।

ओऽम् सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। इस से पुनः शिर पर।

ओ३म् खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र। और इस मन्त्र से सब अंगों पर जल छिड़कें।

हे अन्तर्यामिन् ! मैं व्रत लेता हूँ कि मैं जान बूझकर अपनी ज्ञान - कर्म इन्द्रियों अर्थात वाक्, प्राण, चक्षु, श्रोत्र, हृदय, कण्ठ, शिर, बाहु, करतल और करपृष्ठ आदि से कदापि पाप न करूँगा।

अथ प्राणायाममन्त्राः

ओ३म् भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओं सत्यम्।।

इन मन्त्रों से प्राणायाम की क्रिया भी करते जावें। मन्त्रों का जाप भी करते जावें। कम से कम तीन और अधिक से अधिक २१ (इक्कीस) प्राणायाम करें।

अर्थ :– ईश्वर प्राणों का प्राण, दुःख विनाशक, सुख स्वरुप, सबसे बड़ा, जगदुत्पादक, दुष्टों को सन्तापकारी और अविनाशी है।

अघमर्षण–मन्त्राः

ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः।।१।।
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।।२।।
सूर्य्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।।३।।

ईश्वर सबको उत्पन्न करके सबमें व्यापक होकर अन्तर्यामी रुप से सबके पाप–पुण्यों को देखता हुआ पक्षपात छोड़कर सत्य न्याय से सबको यथावत् फल देता है। ऐसा निश्चित जान के मनुष्यों को उचित है कि मन कर्म वचन से पाप कर्मों को कभी न करें। इसी का नाम अघमर्षण है।

पुनः **'ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्रवन्तु नः।'** इस मन्त्र को एक बार पढ़ के तीन आचमन करें।

।। मनसा–परिक्रमा मन्त्राः ।।

ओ३म् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षिताऽऽदित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।१।।

हे सर्वज्ञ परमेश्वर ! आप हमारे सम्मुख विद्यमान, स्वतन्त्र राजा और हमारी रक्षा करने वाले हैं। आपने सूर्य को रचा है, जिसकी किरणों द्वारा पृथ्वी पर जीवन आता है। आपके आधिपत्य, रक्षा और जीवन प्रदान के लिए, हे प्रभो ! आपको बारम्बार नमस्कार है। जो अज्ञानवश हमसे द्वेष करता है अथवा जिससे हम द्वेष करते हैं, उसे हम आपके न्यायरुपी सामर्थ्य पर छोड़ते हैं।।१।।

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।२।।

हे परमेश्वर ! आप हमारे दक्षिण की ओर व्यापक हैं। आप हमारे राजाधिराज हैं और भुजंगादि बिना हड्डी वाले जन्तुओं से हमारी रक्षा करते हैं, और ज्ञानियों के द्वारा हमें ज्ञान प्रदान करते हैं। आपके आधिपत्य .... (आगे पूर्व मन्त्रा के अर्थ के समान) ।।२।।

प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।३।।

हे सौन्दर्य के भण्डार ! आप हमारे पृष्ठ की ओर हैं, हमारे महाराज हैं, बड़े–बड़े हड्डी वाले और विषधारी जन्तुओं से हमारी रक्षा करते हैं। आपके..............(आगे पूर्ववत्)।।३।।

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।४।।

हे पिता ! आप हमारे वाम पार्श्व में व्यापक हैं और हमारे परम ऐश्वर्ययुक्त स्वामी हैं। आप स्वयम्भू और हमारे रक्षक हैं, आप ही बिजली द्वारा रुधिर की गति और प्राणों की रक्षा करते हैं। आपके.............(आगे पूर्ववत्)।।४।।

ओ३म् ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।५।।

हे सर्वव्यापक प्रभो ! आप हमारे नीचे की ओर के देशों में विद्यमान हैं। आप रंग बिरंगे वृक्षों और लताओं द्वारा हमारे प्राणों की रक्षा करते हैं। आपके (आगे पूर्ववत्)।।५।।

ऊर्ध्वा दिग् वृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।६।।

हे महान् ! आप ऊपर के लोकों में व्यापक, पवित्रात्मा, हमारे स्वामी और रक्षक हैं। आप वर्षा करके हमारी कृषि को सींचते हैं जिससे हमारा जीवन होता है। आपके (आगे पूर्ववत्)।।

उपस्थान मन्त्र

ओ३म् उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ।।१।।

उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।दृशे विश्वाय सूर्यम् ।।२।।

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ।।३।।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम् शरदः शतं जीवेम् शरदः शतं श्रृणुयाम् शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतम् अदीनाः स्याम शरदः शतम् भूयश्च शरदः शतात् ।।४।।

हे प्रभो ! आप अज्ञान अन्धकार के परे, सुखस्वरुप, प्रलय के पश्चात् रहने वाले, दिव्य गुणों के साथ सर्वत्र विद्यमान देव

और हमको जन्म देने वाले हैं, हम आपके उत्तम स्वरुप को प्राप्त हों।।१।।

हे जगदीश्वर! आप सकल ऐश्वर्य के उत्पादक, सर्वज्ञ, जीवात्मा के प्रकाशक हैं, आपकी महिमा सबको दिखाने के लिए संसार के पदार्थ, पताका का काम करते हैं। जैसे झण्डियां मार्ग दिखलाती हैं उसी प्रकार सृष्टि-नियम सबको, आपकी प्रतीति कराते हैं।।२।।

हे स्वामिन् ! इस संसार के समस्त पदार्थ आपको दर्शाते हैं। आप दिव्य पदार्थों के बल हैं। सूर्य, चन्द्र और अग्नि के चक्षु अथवा प्रकाशक हैं। भूमि, आकाश और तदन्तर्गत लोक सब आपके सामर्थ्य में हैं। आप चर-अचर जगत् के उत्पादक और अन्तर्यामी हैं। हे प्रभो ! हम सर्वत्र मन, वाणी और कर्म से सत्य का ग्रहण करें।।३।।

हे सबके मार्गदर्शक ! आप अनादि काल से विद्वानों और संसार के हितार्थ शुद्ध वर्तमान हैं। प्रभो ! हम सौ वर्षों तक आपको देखें। आपका ज्ञान सौ वर्ष सुनें। आपके नाम का सौ वर्ष व्याख्यान करें, सौ वर्ष की आयु भर पराधीन न हों और यदि योगाभ्यास से सौ वर्ष से भी अधिक आयु हो तो भी अदीन होकर इसी प्रकार विचरें।।४।।

गायत्री-मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

हे प्राणस्वरुप दुःखहर्ता, सर्वव्यापक आनन्द के देने वाले प्रभो! आप सर्वज्ञ और सकल जगत् के उत्पादक हैं। हम आपके उस पूजनीय पापनाशक तेज का ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है। हे पिता ! आप से हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो। आप कृपा करके हमारी बुद्धियों में सदैव प्रकाशित रहें और हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों में प्रेरित करें।

अथ समर्पणम्

हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः ।।

हे परमेश्वर दयानिधे ! आपकी कृपा से जपोपासनादि कर्मों को करके हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि को शीघ्र प्राप्त होवें।

नमस्कार मन्त्र

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च । नमः शिवाय च शिवतराय च ।।

जो सुख स्वरुप संसार के उत्तम सुखों को देने वाला, कल्याणकारी मोक्षस्वरुप, धर्म-युक्त कार्यों का ही करने वाला, अपने भक्तों को सुख देने वाला और धर्म कार्यों में युक्त करने वाला, अत्यन्त मंगलस्वरुप एवं धार्मिक मनुष्यों को मोक्षसुख देने वाला है उस परमेश्वर को हमारा बारम्बार नमस्कार हो।

सामान्य नित्य यज्ञ पद्धति

प्रथम निम्नलिखित मन्त्रों से तीन बार आचमन करें।

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।।१।। इससे पहला

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा ।।२।। इससे दूसरा

ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयिः श्रीः श्रयतां स्वाहा ।।३।। इससे तीसरा

बाएं हाथ में जल लेकर निम्नलिखित मन्त्रों से अंग स्पर्श करें-

ओ३म् वाङ्म आस्येऽस्तु ।।१।। (मुख को स्पर्श करें)

ओ३म् नसोर्मे प्राणोऽस्तु ।।२।। (दोनों नथनों को स्पर्श करें)

ओ३म् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ।।३।। (दोनो आंखों को स्पर्श करें)

ओ३म् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ।।४।। (दोनों कानो को स्पर्श करें)

ओ३म् बाह्वोर्मे बलमस्तु ।।५।। (दोनों भुजाओं को स्पर्श करें)

ओ३म् उर्वोर्मओजोऽस्तु ।।६।। (दोनों जंघाओं को स्पर्श करें)

ओ३म् अरिष्टानि मेऽङ्गागि तनूस्तन्वा में सह सन्तु ।।७।। (सारे शरीर पर जल छिड़कें)

निम्नलिखित मन्त्रों का पाठ और अर्थ द्वारा एक विद्वान व बुद्धिमान पुरुष ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना स्थिरचित्त होकर परमात्मा में ध्यान लगा के करे और सब लोग उसमें ध्यान लगाकर सुनें और विचारें।

अथ ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना:

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ।।१।। यजु० अ० ३०। मन्त्र ३।।

अर्थ :- हे {सवितः} सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता समग्र ऐश्वर्ययुक्त (देव) शुद्ध स्वरुप, सब सुखों के दाता परमेश्वर ! आप कृपा करके (नः) हमारे (विश्वानि) सम्पूर्ण {दुरितानि} दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को {परा सुव} दूर कीजिए। {यत्} जो {भद्रम्} कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, {तत्} वह सब हमको {आ सुव} प्राप्त कीजिए।

तू सर्वेश, सकल सुख दाता, शुद्ध स्वरुप विधाता है।
उसके कष्ट नष्ट हो जाते जो तेरे ढिग आता है।
सारे दुर्गुण दुर्व्यसनों से हमको नाथ बचा लीजे।
मंगलमय गुण–कर्म–पदार्थ प्रेम–सिन्धु हमको दीजे।।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मैदेवाय हविषा विधेम ।।२।।

– यजु० अ० १३। मंत्र ४।।

अर्थ :– जो {हिरण्यगर्भः} स्वप्रकाशस्वरुप, और जिसने प्रकाश करने हारे सूर्य चन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, जो {भूतस्य} उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का {जातः} प्रसिद्ध {पतिः} स्वामी {एकः} एक ही चेतनस्वरुप {आसीत्} था, जो {अग्रे} सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व {समवर्तत} वर्तमान् था, {सः} वह {इमाम्} इस {पृथिवीम्} भूमि {उत} और {द्याम्} सूर्यादि को {दाधार} धारण कर रहा है, हम लोग उस {कस्मै} सुखस्वरूप {देवाय} शुद्ध परमात्मा के लिये {हविषा} ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से विशेष {विधेम} भक्ति किया करें।।२।।

तू ही स्वयं–प्रकाश, सुचेतन, सुख स्वरुप शुभ त्राता है।
सूर्य–चन्द्र लोकादिक को तू रचता और टिकाता है।।
पहिले था अब भी तू ही है घट–घट में व्यापक स्वामी।
योग, भक्ति, तप द्वारा तुझको पावें हम अन्तर्यामी।।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।३।।

यजु० अ० २५। मंत्र १३।।

अर्थ – (यः) जो (आत्मदा) आत्मज्ञान का दाता, (बलदा) शरीर, आत्मा और समाज के बल का देने हारा, (यस्य) जिसकी (विश्वे) सब (देवाः) विद्वान लोग (उपासते) उपासना करते हैं, और (यस्य) जिसका (प्रशिषम्) प्रत्यक्ष सत्यस्वरुपशासन, न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं। (यस्य) जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही (मृत्युः) मृत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) सकल ज्ञान के देने हारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए (हविषा) आत्मा और अन्तःकरण से (विधेम) भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें।।३।।

तू ही आत्मज्ञान बल दाता, सुयश विज्ञ जन गाते हैं।
तेरी चरण-शरण में आकर भवसागर तर जाते हैं।।
तुझको ही जपना जीवन है, मरण तुझे विसराने में।
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु, तुझसे लगन लगाने में।।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।४।।

यजु० अ० ३२। मन्त्र ३।।

अर्थ – (यः) जो (प्राणतः) प्राण वाले और (निमिषतः) अप्राणिरुप (जगतः) जगत् का (महित्वा) अपनी अनन्त महिमा से (एक इत्) एक ही (राजा) राजा (बभूव) विराजमान है; (यः) जो (अस्य) इस (द्विपदः) मनुष्यादि और (चतुष्पदः) गौ आदि प्राणियों के शरीर की (ईशे) रचना करता है, हम लोग उस (कस्मै) सुखस्वरुप (देवाय) सकलैश्वर्य के देने हारे परमात्मा की उपासना अर्थात् (हविषा) अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञा पालन में समर्पित करके (विधेम) विशेष भक्ति करें।।४।।

तूने अपनी अनुपम माया से जग–ज्योति जगाई है।
मनुज और पशुओं को रचकर निज महिमा प्रगटाई है।।
अपने हिय–सिंहासन पर श्रद्धा से तुझे बिठाते हैं।
भक्ति भाव से भेटें लेकर तव चरणों में आते हैं।।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः ।
योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

– यजु० अ० ३२। मन्त्र ६।।

अर्थ – (येन) जिस परमात्मा ने (उग्रा) तीक्ष्ण स्वभाव वाले (द्यौः) सूर्य आदि (च) और (पृथिवी) भूमि को (दृढ़ा) धारण किया, और (येन) जिस ईश्वर ने (नाकः) दुःखरहित मोक्ष को धारण किया है, (यः) जो (अन्तरिक्षे) आकाश में (रजसः) सब लोक–लोकान्तरों को (विमानः) विशेष मानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे लोकों को निर्माण करता और

भ्रमण कराता है, हम लोग उस (कस्मै) सुखदायक (देवाय) कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिये (हविषा) सब सामर्थ्य से (विधेम) भक्ति करें।।५।।

तारे, रवि चन्द्रादिक रचकर निज प्रकाश चमकाया है।
धरणी को धारण कर तूने कौशल अलख लखाया है।।
तू ही विश्व विधाता, पोषक, तेरा ही हम ध्यान करें।
शुद्ध भाव से भगवन् ! तेरे भजनामृत का पान करें।।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।

ऋ० मण्डल १०। सू० १२१। मं० १०

अर्थ – हे (प्रजापते) सब प्रजा के स्वामी परमात्मा ! (त्वत्) आपसे (अन्यः) भिन्न दूसरा कोई (ता) उन (एतानि) इन (विश्वा) सब (जातानि) उत्पन्न हुए जड़ चेतनादिकों को (न) नहीं (परिबभूव) तिरस्कार करता है, अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। (यत्कामाः) जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले होके हम लोग (ते) आपका (जुहुमः) आश्रय लेवे और वाञ्छा करें, (तत्) उस उसकी कामना (नः) हमारी सिद्ध (अस्तु) होवे, जिससे (वयम्) हम लोग (रयीणाम्) धनैश्वर्यों के (पतयः) स्वामी (स्याम) होवें।

तुझसे भिन्न न कोई जग में, सब में तुही समाया है।
जड़ चेतन सब तेरी रचना, तुझमें आश्रय पाया है।।

हे सर्वोपरि विभो ! विश्व का, तूने साज सजाया है।
हेतु रहित अनुराग दीजिये यही भक्त को भाया है।।

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेदभुवनानि विश्वा । यत्र देवाऽअमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।।७।।

–यजु० ३२। मं० १०।।

अर्थ – हे मनुष्यो ! (सः) वह परमात्मा (नः) अपने लोगों को (बन्धुः) भ्राता के समान सुखदायक, {जनिता} सकल जगत् का उत्पादक, {सः} वह {विधाता} सब कामों का पूर्ण करने हारा, {विश्वा} सम्पूर्ण {भुवनानि} लोकमात्र और {धामानि} नाम, स्थान, जन्मों को {वेद} जानता है और {यत्र} जिस {तृतीये} सांसारिक सुख–दुःख से रहित नित्यानन्द युक्त {धामन्} मोक्ष स्वरुप धारण करने हारे परमात्मा में {अमृतम्} मोक्ष को {आनशानाः} प्राप्त होके {देवाः} विद्वान् लोग {अध्यैरयन्त} स्वेच्छा पूर्वक विचरते हैं वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। अपने लोग मिल के सदा उसकी भक्ति किया करें।।७।।

तू गुरु है, प्रजेश भी तू है, पाप–पुण्य फल दाता है।
तू ही सखा बन्धु मम तू ही, तुझसे ही सब नाता है।।
भक्तों को इस भव बन्धन से, तूही मुक्त कराता है।
तू है अज, अद्वैत, महाप्रभु सर्वकाल का ज्ञाता है।।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ।।८।।

–यजु० अ० ४०। मन्त्र १६।।

अर्थ – हे (अग्ने) स्वप्रकाश, ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करने हारे (देव) सकल सुखदाता परमेश्वर ! आप जिससे (विद्वान्) सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके (अस्मान्) हम लोगों को (राये) विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए (सुपथा) अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से (विश्वानि) सम्पूर्ण (वयुयानि) प्रज्ञान और उत्तम कर्म (नय) प्रांप्त कराइये और (अस्मत्) हमसे (जुहुराणम्) कुटिलतायुक्त (एनः) पापरुप कर्म को (युयोधि) दूर कीजिये, इस कारण हम लोग (ते) आपकी (भूयिष्ठाम्) बहुत प्रकार की स्तुति रुप (नमः उक्तिम्) नम्रतापूर्वक प्रशंसा (विधेम) सदा किया करें, और सर्वदा आनन्द में रहें।।८।।

तू है स्वयं प्रकाश रूप प्रभु, सबका सिरजनहार तुही।
रसना निशि–दिन रटे तुम्हीं को, मन में बसना सदा तुही।।
अघ–अनर्थ से हमें बचाते रहना, हर दम दयानिधान।
अपने भक्त जनों को भगवन् दीजे यही विशद वरदान।।

।। इतीश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनाः मन्त्राः ।।

होम विधि

यज्ञकुण्ड में समिधाओं का चयन करें और चम्मच में कपूर रखकर निम्न मन्त्र को उच्चारण करके जलायें -

ओ३म् भूर्भुवः स्वः ।।

गोभिल गृ. पृ. १ खं. १ सूत्र ११।।

फिर अगले मन्त्र को बोलकर उस अग्नि को हवनकुण्ड में रख दें।

ओ३म् भूर्भुवः स्वर्द्यौरिवभूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवी देवयजनिपृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ।।१।।

निम्नलिखित मन्त्र से अग्नि को घृत तथा छोटी-छोटी समिधा रखकर प्रज्वलित करें।

ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते संसृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ।।

जब अग्नि समिधाओं में प्रविष्ट होने लगे तब आठ-आठ अंगुल की तीन समिधा घृत में डुबा नीचे लिखे एक-एक मन्त्र से एक-एक समिधा को अग्नि में चढ़ावें -

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।

इदमग्नये जातवेदसे - इदं न मम ।।१।।

इससे एक समिधा और

ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत, घृतैर्बोधयतातिथिम् ।
आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा । इदमग्नये - इदं न मम ।।२।।
सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन ।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे - इदं न मम ।

(इन दोनों मन्त्रों से दूसरी समिधा)

तन्त्वा समिद्भिरंगिरो घृतेन वर्द्धयामसि ।
बृहच्छोचायविष्ठ्यस्वाहा । इदमग्नयेऽङ्गिरसे - इदं न मम ।।४।।

(इससे तीसरी समिधा)

(निम्न मन्त्र से घी की पांच आहुतियां दें)

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्धवर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ।। इदमग्नये जातवेदसे - इदं न मम ।।

तत्पश्चात् अञ्जलि में जल लेकर अधोलिखित मन्त्रों से वेदी के चारों ओर मन्त्र के सामने दिये निर्देश के अनुरूप जल छिड़कें।

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व ।।१।। (इससे पूर्व दिशा में)

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व ।।२।। (इससे पश्चिम में)

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व ।।३।। (इससे उत्तर में)

ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय । दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ।।४।।

यजुर्वेद अ. ३० मं० १।।

(इससे वेदी के चारों ओर जल छिड़कें)

आघारावाज्याहुति

निम्नलिखित मन्त्रों से घृताहुति दें।

ओ३म् अग्नये स्वाहा । इदमग्नये - इदं न मम ।

(इस मन्त्र से यज्ञकुण्ड के उत्तर भाग में प्रज्वलित अग्नि में घृताहुति देवें।)

ओ३म् सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय - इदं न मम ।।२।।

(इस मन्त्र से यज्ञकुण्ड के दक्षिण भाग में तत्पश्चात् इन मन्त्रों से यज्ञकुण्ड के मध्य भाग में घृताहुति देवें।)

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये - इदं न मम ।।१।।

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा । इदं इन्द्राय - इदं न मम ।।२।।

।।प्रातःकालीन आहुति के मन्त्र।।

ओ३म् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।।१।।
ओ३म् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।।२।।
ओ३म् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।।३।।
ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्र वत्या जुषाणः ।
सूर्योवेतु स्वाहा ।

।।सायंकालीन आहुति के मन्त्र।।

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।।१।।
ओ३म् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहाः ।।२।।
ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।।३।।

(इस मन्त्र को मन में बोलकर तीसरी आहुति)

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या। जुषाणोऽग्निर्वेतु स्वाहा ।

प्रातः सायं दोनों समय के मन्त्र

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा । इदमग्नये प्राणाय - इदन्न मम ।
ओ३म भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा । इदं वायवेऽपानाय - इदन्न मम ।।

ओ३म स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्यायव्यानाय - इदन्न मम।

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणपानव्यानेभ्यः - इदन्न मम।

ओ३म् आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ।।

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ।।

जो व्यक्ति प्रातःकाल व सायंकाल यज्ञ करते हैं, वे प्रातःकाल की आहुतियां प्रातः तथा सायंकाल की आहुतियां ही सायंकाल को दें, तदनन्तर पूर्णाहुति करें, किन्तु जो व्यक्ति दिन में एक बार ही यज्ञ करते हैं वे दोनों समय की आहुतियां उपरिलिखित क्रमानुसार दें, तदनन्तर आगे लिखे मन्त्रों से आहुति देकर पूर्णाहुति करें।

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव स्वाहा।

य. अ. ३०। मं० ३।।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।

इसके पश्चात् जितनी चाहे गायत्री मन्त्र का पाठ स्वाहान्त करते हुए आहुति देते जावें।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

पश्चात निम्न मन्त्र से पूर्णाहुति तीन बार करें। विशेष यज्ञ हेतु पूर्णाहुति प्रकरण का पाठ कर पश्चात् पूर्णाहुति करें -

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ।

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ।

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ।

मंगल प्रार्थना

ओ३म् तनूपाअग्नेऽसि तन्वं मे-पाहि, ओ३म् आयुर्दाअग्नेऽस्यायुर्मे देहि ओ३म् वर्चोदाअग्नेऽसि वर्चो मे देहि, ओ३म् अग्ने यन्मे तन्वाऊनं तन्म आपृण।

हे परमपिता परमात्मन् आप अपनी अद्भुत कृपा व्यवस्था से इस सृष्टि रुपी शरीर का पालन करते हो, हमें भी शरीर को पालने की क्षमता दें। आप आयु का पालन करते हैं हम भी आयु का पालन करें। आप वर्चस्वी व वर्चस्व रक्षक हैं हमें भी वर्चस्व के पालन की प्रेरणा करें। आप इस अग्नि स्वरूप से आपूरित (पूर्ण है) उसी अग्नि, ज्ञान स्वरूप को ज्ञान विवेक पूर्ण कार्य करने में समर्थ हो सकें।

ओ३म् मेधां मे देव सविता आददातु। ओ३म् मेधां मे देवी सरस्वती आददातु। ओ३म् मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ।

सूर्य के प्रकाशक परमात्मन् मुझे मेधा – उचित अनुचित विवेचनात्मक बुद्धि दें। हे जातवेद परमेश्वर! मुझे मेधा बुद्धि दो। सूर्य चन्द्र-आग्नेय लोक गुण समन्वित परमात्मन्! हम अपने गुणों का प्रसार कर उन्हें फूलों में गूंथ कर लोक का आकर्षण बनें।

ओ३म् तेजोऽसि तेजो मयि धेहि, ओ३म् वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि, ओ३म् बलमसि बलं मयि धेहि, ओ३म् ओजोऽस्योजो मयि धेहि, ओ३म् मन्युरसि मन्युं मयि धेहि, ओ३म् सहोऽसि सहोमयि धेहि।

आप प्रकाशस्वरुप हैं कृपा कर मुझमें प्रकाश स्थापन कीजिये। आप अनन्त पराक्रमयुक्त हैं इसलिए मुझमें भी कृपा करके पूर्ण पराक्रम धरिये। आप अनन्त बलयुक्त हैं इसलिये मुझमें भी बल धारण कीजिये। आप अनन्त सामर्थ्ययुक्त हैं, मुझको भी पूर्ण सामर्थ्य दीजिए। आप दुष्ट काम और दुष्टों पर क्रोध ाकारी हैं, मुझको भी वैसा ही कीजिए। आप निन्दा, स्तुति और स्व अपराधियों का सहन करने वाले हैं कृपा से मुझको भी वैसा ही कीजिए।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्॥

सब का भला करो भगवान, सब पर दया करो भगवान,
सब की व्यथा हरो भगवान्, सबका सब विधि हो कल्याण।

ओ३म् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।।

स्तुति करते हम वेद ज्ञान की, जो माता है प्रेरक, पालक, पावन करती मनुज मात्र को आयु, बल, सन्तति, पशु, कीर्ति, धन, मेधा, विद्या का दान, सब कुछ देकर हमें दिया है मोक्ष मार्ग का पावन ज्ञान।

श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्।
तेजमायुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन।।

हे हव्यवाहन! संसार को अपने ज्ञान से सुगन्धित करने वाले परमात्मन! आप हमें श्रद्धा, यश, प्रज्ञा, विद्या, पुष्टि, शोभा, आरोग्य सहित तेजस्विता से युक्त करें।

अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणाः।
अधनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्।।

सभी पुत्र पौत्रों को प्राप्त करें। निर्धन धनवान होकर सौ वर्ष का अदीन जीवन प्राप्त करें।

कालेवर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी ।
देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः ।।

समय पर वर्षा होकर पृथिवी, वनस्पति युक्त होवे। राष्ट्र जीवन क्षोभरहित होकर, ब्राह्मण निर्भय होकर धर्म का प्रचार-प्रसार करें।

दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च ।
श्रद्धा च नो माव्यगमद् बहु देयं च नोऽस्त्विति ।।

हे दाता परमेश्वर हम वेद ज्ञान सम्पन्न होकर सुसन्तानवान एवं श्रद्धावान होते हुए दानशील प्रवृत्ति के बनें।

अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि ।
याचितारश्च नः सन्तु मास्म याचिष्म कश्चन ।।

हम पर्याप्त अन्नों के स्वामी होवें। हमारे अतिथि सदा तृप्त होकर हमारे मार्गदर्शक होवें। याचक हमारे घर से निराश न जावे। हम कभी याचक न बनें।

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम् ।
कामये दुःख तप्तानां प्राणिनाम् आर्त्तनाशनम् ।।

हे परमेश्वर! मुझे न आपके राज्य की, ना स्वर्ग और न पुनः जन्म की इच्छा है। इच्छा बस इतनी है कि संसार में दुःख से दुःखी प्राणियों के कष्ट को दूर कर सकूं।

सर्वत्र शान्ति ही शान्ति

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी
शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः
शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं
शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।१८।।

यजु. ३६। १७।।

अर्थ– (**द्यौः**) द्युलोक (**अन्तरिक्षं**) मध्य–लोक (**पृथिवी**) भू–लोक (**आपः**) जल (**ओषधयः**) ओषधियाँ (**वनस्पतयः**) वनस्पतियाँ = वृक्ष (**विश्वे–देवाः**) सब देव लोग (**ब्रह्म**) ईश्वर या वेद विद्या और (**सर्वम्**) अन्य सब वस्तुएं (**शान्तिः**) शान्त हैं {**शान्ति शब्द का प्रत्येक शब्द के साथ मन्त्र में अन्वय है**}। (**शान्तिः एवं शान्तिः**) स्वयं शान्ति भी सुखदायिनी है (**सा**) वह (**शान्तिः**) शान्ति (**मा**) मुझको (**एधि**) प्राप्त होवे।।१८।।

राष्ट्रीय प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्। आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम् दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठा सभेयो

युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ।।

(अथर्व. २ मन्त्र २२)

'ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हो, द्विज ब्रह्मतेजधारी।
क्षत्री महारथी हों अरि दल–विनाशकारी।।
होवें दुधारू गौवें, पशु अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही।।
बलवान सभ्य योद्धा, यजमान–पुत्र होवें।
इच्छानुसार वर्षें, पर्जन्य ताप धोवें।।
फल–फूल से लदी हों औषध अमोघ सारी।
हो योग–क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी।।'

विश्व कल्याण प्रार्थना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ।।

सबका भला करो भगवान् सब पर दया करो भगवान्।
सबकी व्यथा हरो भगवान् सबका सब विधि हो कल्याण।।

हे ईश सब सुखी हों कोई न हो दुखारी।
सब हों निरोग भगवन् धनधान्य के भण्डारी।।

सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे सृष्टि में प्राणधारी।।

पूर्णाहुति प्रकरण

निम्नलिखित मन्त्रों से घृताहुति दें।

ओ३म् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये - इदं न मम ।।१।।

(इस मन्त्र से यज्ञकुण्ड के उत्तर भाग में प्रज्वलित अग्नि में घृताहुति देवें।)

ओ३म् सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय - इदं न मम ।।२।।

(इस मन्त्र से यज्ञकुण्ड के दक्षिण भाग में तत्पश्चात् इन मन्त्रों से यज्ञकुण्ड के मध्य भाग में घृताहुति देवें।)

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये - इदं न मम ।।१।।
ओ३म् इन्द्राय स्वाहा । इदं इन्द्राय - इदं न मम ।।२।।

व्याहृत्याहुति मन्त्राः

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये - इदन्न मम ।।१।।
ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे - इदन्न मम ।।२।।
ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा। इदमादित्याय - इदन्न मम ।।३।।

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा । इदमग्नि वायव्यादित्येभ्यः - इदन्न मम ।।४।।

ये चार घी की आहुति देकर स्विष्टकृत होमाहुति एक ही दें; वह घृत अथवा भात की हो।

स्विष्टकृदाहुति मन्त्रः

ओ३म् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् । अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे । अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रो सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते - इदन्न मम ।।

प्राजापत्याहुति नीचे लिखे मन्त्र को मन में बोलकर देनी चाहिए।

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये - इदन्न मम ।।

अब चार आहुतियां घृत की इन मन्त्रों से देवें।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय - इदन्न मम ।।१।।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । तमीमहे महागयं स्वाहा । इदमग्नये पवमानाय - इदन्न मम ।।२।।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा । इदमग्नये पवमानाय - इदन्न मम।।३।।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा। इदं प्रजापतये - इदन्न मम ।।४।।

साधारण हवन तथा संस्कारों में विशेष-विशेष अवसर पर निम्नलिखित आठ आज्याहुति इन आठ मन्त्रों से दें।

ओ३म् त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेड़ोऽवयासिसीष्ठा । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्याम् - इदन्न मम ।।१।।

ओ३म् स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अवयक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्याम् - इदन्न मम ।।२।।

ओ३म् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके स्वाहा। इदं वरुणाय - इदन्न मम ।।३।।

ओ३म् तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेड़मानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा । इदं वरुणाय - इदन्न मम ।।४।।

ओ३म् ये ते शतं वरूण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः - इदन्न मम ।।५।।

ओ३म् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजं स्वाहा । इदमग्नये अयसे - इदन्न मम ।।६।।

ओ३म् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा । इदं वरुणायाऽऽदित्यायादितये च - इदन्न मम ।।७।।

ओ३म् भवतन्नः संमनसौ सचेतसावरेपसौ । मा यज्ञँ हिँ सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा । इदं जातवेदोभ्यां - इदन्न मम ।।८।।

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ।

इस मन्त्र से एक आहुति देवें ऐसे ही दूसरी और तीसरी आहुति देके यज्ञ सम्पन्न करें।

विशेष यज्ञ के लिये

स्वस्तिवाचन

ओ३म् अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ।।१।।

हम लोग विद्वानों के सत्कार, संगम महिमा और कर्म के देने तथा ग्रहण करने वाले उत्पत्ति के समय से पहिले परमाणु आदि सृष्टि के धारण करने और बारम्बार उत्पत्ति के समय में स्थूल सृष्टि के रचने वाले ऋतु में उपासना करने योग्य और निश्चित करके मनोहर पृथिवी वा सुवर्ण आदि रत्नों के धारण करने या देने तथा सब पदार्थों के प्रकाश करने वाले परमेश्वर की स्तुति करते हैं।

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये ।।२।।

हे उत्तम गुण युक्त ज्ञानस्वरुप परमेश्वर; जैसे पिता अपने पुत्र के लिए उत्तम ज्ञान का देने वाला होता है, वैसे ही आप हम लोगों के लिए शोभन ज्ञान, जो कि सब सुखों का साधक और उत्तम-उत्तम पदार्थों को प्राप्त कराने वाला है, उसके देने वाले होकर हम लोगों को सब सुखों के लिए संयुक्त कीजिये।

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः । स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना ।।३।।

अध्यापक और उपदेशक हमारे लिये कल्याण को करें सेवनीय वायु सुख या कल्याण का सम्पादन करें। अखण्डित प्रकाश वाली विद्युत विद्या ऐश्वर्यसहित हम लोगों के लिए कल्याण करे। पुष्टि करने वाले दुग्धादि पदार्थ तथा प्राणों को देने वाला मेघ आदि हमारे लिए कल्याण को देवे। द्यौ और पृथिवी अच्छे विज्ञान से युक्त हुए हमारे लिए कल्याणकारी हों।

स्वस्तये वायुमुपब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः ।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ।।४।।

कल्याण के लिए वायु के समान वेगवान् तथा चन्द्र के समान आह्लादक परमेश्वर की हम स्तुति करते हैं। जो सारे संसार का स्वामी है, वह हमारे लिए कल्याणकारक हो। सब समूह वाले बड़े ब्रह्माण्डों व वेद ज्ञान के रक्षक परमात्मा की कल्याण के लिए हम स्तुति करते हैं। वेद विद्या या भूमि माता के पुत्र अथवा ४८ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य को धारण करने वाले ब्रह्मचारी हमारे कल्याण के लिए होवें।

विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये ।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ।।५।।

आज सब विद्वान् लोग हमारे कल्याण के लिए हों। सब नरों का हितकारी सबको वास देने वाला या सर्वत्र बसने वाला ज्ञान–स्वरूप परमेश्वर या भौतिक अग्नि हमारे कल्याण के लिए हो। बुद्धिमान ज्ञानी देव लोग कल्याण के लिये रक्षा करें।

दुष्टों को रुलाने वाला परमात्मा या आचार्य सुखपूर्वक हमारी पाप से रक्षा करे।

स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ।।६।।

प्राण और उदान वायु सुखमय हों, धन के मार्ग में कल्याण हो, वायु और बिजली हमारे लिए कल्याण करें। हे अखण्डव्रत परमेश्वर हमारे लिए कल्याण करो।

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि ।।७।।

हम सूर्य और चन्द्रमा के समान कल्याण के मार्ग के अनुगामी हों और फिर दान देने वाले वैश्यों, अहिंसक क्षत्रियों और ज्ञानी ब्राह्मणों का संग करें।

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः।
ते नो रासंतामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।।८।।

जो पूजनीय विद्वानों में भी अत्यन्त पूजनीय, मननशील मनुष्य के साथ संगति करने वाले व पूजनीय अमर कीर्ति वाले अमर या जीवन्मुक्त सत्यज्ञानी महात्मा लोग हैं, वे आज हमको बहुत से गाए हुए विद्या बोध का या विस्तृत मार्ग का उपदेश करें। आप सब लोग कल्याणकारक उपायों से हमेशा हमारी रक्षा करें।

**येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः ।
उक्थशुष्मान् वृषभराँन्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदा स्वस्तये ।।९।।**

जिन आदित्य ब्रह्मचारियों या विद्वानों के लिए अथवा जिनकी सहायता से सबका निर्माण करने वाली माता के समान पृथिवी माधुर्ययुक्त दुग्धादि पदार्थों को या जल को बहाती है और अखण्डनीय मेघों से बढ़ा हुआ अन्तरिक्ष लोक सुन्दर जल आदि को देता है, उन अत्यन्त बल वाले यज्ञ द्वारा वृष्टि का आहरण करने वाले शोभन कर्म वाले उन आदित्य ब्रह्मचारियों को उपद्रव न होने के लिए प्रसन्न करें।

**नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः ।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ।।१०।।**

मनुष्यों के कर्मों का निरीक्षण करने वाले विद्वान् लोग कभी आँखें न मीचने वाले, दिन रात काम करने वाले, एक क्षण भी व्यर्थ न खोने वाले, अप्रमादी, आलस्य रहित लोगों के पूजनीय या अतियोग्य दिव्यगुण सम्पन्न विद्वान् लोग बड़े मोक्ष सुख को या अमर पद को प्राप्त करते हैं। ज्ञान रुपी रथ पर चढ़कर विचरने वाले, ज्योतिष्मान् रथ पर सवार अर्थात् प्रकाश में रमण करने वाले अदम्य बुद्धि वाले अर्थात् जिनकी बुद्धि को कोई दबा नहीं सकता, निष्पाप जन अथवा पाप रहित वे आदित्य ब्रह्मचारी अन्तरिक्ष लोक में या द्युलोक में या प्रकाशयुक्त उच्च स्थान में निवास करते हैं, वे हमारे लिए कल्याणकारी हों।

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृतां दधिरे दिवि क्षयम् ।
तां आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये ।।११।।

जो अपने तेज से अच्छे प्रकार प्रकाशमान अच्छे ढंग से अपनी और दूसरों की बढ़ती खुशहाली चाहने वाले, वृद्धि करने वाले या ज्ञानादि से परोपकार रुपी यज्ञ कार्य को या यज्ञमय जीवन को प्राप्त करते हैं, जो कुटिलता रहित या किसी से भी अपीड़ित द्युलोक में या प्रकाश में निवास को धारण करते है। महान् अखण्ड व्रतधारी आदित्य ब्रह्मचारियों को अखण्ड नियम या सच्चाई को अथवा अखण्ड व्रतधारी आदित्य ब्रह्मचारियों को सच्चाई को अथवा अखण्डनीय आत्म विद्या को नमस्कार या हव्यान्न के साथ अच्छी स्तुतियों के साथ कल्याण के लिए सेवन कराइये।

को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन ।
को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये ।।१२।।

हे समस्त दिव्य गुण युक्त विद्वानों ! मननशील पुरुषों ! जितने भी तुम हो। उन तुम लोगों के लिए जिस स्तुति समूह को तुम सेवन करते हो, उसको कौन सिद्ध करता है। हे अनेक प्रकार के जन्म वालो ! कौन तुम्हारे लिए हिंसा रहित यज्ञ को अलंकृत करता है। जो यज्ञ पाप को हटाकर कल्याण के लिए हमको पार ले जाता है।

येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्तहोतृभिः ।
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये ।।१३।।

जिन आदित्य ब्रह्मचारियों के लिए अग्निहोत्री मननशील विद्वान् लोग बड़े--बड़े यज्ञों द्वारा सम्मान करते हैं वे आदित्य ब्रह्मचारी भयरहित सुख को देवें और हमारे कल्याण के लिए शोभन वैदिक मार्गों को अच्छे प्रकार प्राप्त करें।

य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ।।१४।।

जो विद्वान् लोग अच्छे ज्ञान वाले सबके जानने वाले स्थावर और जंगम सब लोकों के मालिक बनते हैं वे आज कल्याण के लिए किये हुए और नहीं किये हुए पाप से पार करें।

भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम् ।
अग्निं मित्रं वरूणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरूतः स्वस्तये ।।१५।।

हे ईश्वर ! पाप के हटाने वाले, जिसका बुलाना अच्छा हो, ऐसे शक्तिशाली विद्वानों को संग्रामों में अपनी रक्षा के लिए बुलावें और श्रेष्ठ कर्म वाले आस्तिक पुरुष को बुलावें और अनादिकाल के लिए अनुपद्रव के लिए अग्निविद्या को, प्राण विद्या को, हम सेवन करें।

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्त्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ।।१६।।

अच्छी प्रकार रक्षा करने वाली लम्बी चौड़ी उपद्रव रहित अच्छा सुख देने वाली, जो टूट न सके, जो अच्छे प्रकार बनाई गई है, सुन्दर यन्त्रों से युक्त दृढ़ विद्युत् सम्बन्धी नौका के ऊपर हम लोग सुख के लिए चढ़ें।

विश्वे यजत्रा अधिवोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिहुतः ।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम श्रृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ।।१७।।

हे पूजनीय विद्वानों ! हमारी रक्षा के लिए आप उपदेश दिया करें और पीड़ा देने वाली दुर्गति से हमारी रक्षा करें। हे विद्वान् लोगों ! हमारी स्तुति सुनने वाले आपको, सच्ची तुम्हारी देवताओं के योग्य स्तुति से हम शत्रुओं से रक्षा करने के लिए और सुख के लिए बुलाया करें।

अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः ।
आरे देवा द्वेषो ऽस्मद्युयोतनोरुणः शर्म यच्छता स्वस्तये ।।१८।।

हे विद्वान् लोगों ! रोगादि को पृथक् करो। सब मनुष्यों की देवताओं के न बुलाने की बुद्धि को पृथक् करो। लोभ बुद्धि को पृथक् करो। पाप की इच्छा करने वाले शत्रु की दुष्ट बुद्धि को दूर करो। द्वेष करने वाले सबों को हमसे बहुत दूर करो। हमें कल्याण के लिए बहुत सुख दो।

अरिष्टः स मर्त्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि ।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये ।।१९।।

हे आदित्य ब्रह्मचारियों ! जिन पुरूषों को, अच्छी नीतियों से सब पापों को उल्लंघन करके सन्मार्ग में प्रवृत्त करते हो, वे सब पुरुष किसी से पीड़ित न होकर बढ़ते हैं और धर्मानुष्ठान के बाद पुत्र पौत्रादिकों से अच्छी तरह प्रकट होते हैं।

यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने ।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये ।।२०।।

हे मितभाषी देवता-विद्वान लोगों ! अन्न के लाभ के लिए जिस रमणीय गमन साधन वाष्प यानादि की रक्षा करते हो और रक्खे हुए धन के कारण संग्राम में जिन रथ की रक्षा करते हो, बड़े यन्त्र कला के विद्वानों से सेवनीय प्रातःकाल से ही गमन करने वाले उसी रथ पर हम कल्याण के लिए चढ़ें।

स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति ।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ।।२१।।

हे मितभाषी विद्वान् लोगों। हमारे लिए मार्ग के योग्य अर्थात् जलसहित देशों में कल्याण करो, जलरहित देशों में कल्याण करो, जलों में कल्याण करो, सब आयुधों से युक्त शत्रुओं को दबाने वाली सेना में कल्याण करो, हमारी सन्तानों के जन्म स्थानों में कल्याण करो और गवादि धन के लिए कल्याण को धारण करो।

स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वस्त्यभि या वाममेति ।
सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा ।।२२।।

जो पृथ्वी जाने वालों के अच्छे मार्ग के लिये कल्याणकारिणी ही होती है और जो अति सुन्दर धन वाली है तथा सेवन के योग्य यज्ञ को प्राप्त होती है वह पृथिवी हमारे गृह की रक्षा करे, वही पृथ्वी वनादि देशों में हमारी रक्षिका हो और विद्वान् लोग जिससे रक्षक है ऐसी वह पृथ्वी हमारे लिए अच्छे स्थान वाली हो।

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशंसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ।।२३।।

हे ईश्वर ! अन्नादि इष्ट पदार्थों के लिए और बलादि के लिए हम आपका आश्रय लेते हैं। हे जीवों ! तुम वायु सदृश पराक्रम करने वाले हो। सब जगत का उत्पादक देव यज्ञ रूप श्रेष्ठ कर्म के लिए तुम सबको सम्बद्ध करे। उस यज्ञ के द्वारा अपने ऐश्वर्य के भाग को बढ़ाओ। व्याधि विशेषों से रहित हमारी गौएँ उत्तम बछड़े-बछड़ी जनने वाली हों। तुम लोगों पर चोर और अन्य पापी शासन न करें। ऐसा प्रयत्न करो कि बहुत सी चिरकाल पर्यन्त रहने वाली गौएँ इस गो-रक्षक के पास बनी रहें। परमात्मा से प्रार्थना करो कि हे ईश्वर ! यजमान के पशुओं की रक्षा करो।

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ।।२४।।

हे ईश्वर ! हमें कल्याणकारी संकल्प प्राप्त हों। सब ओर से किसी से अविघ्नित सर्वोत्तम दुःखनाशक विद्वान् लोग जैसे हमारी सभा में व सर्वदा बुद्धि के लिए ही हों, वैसे ही प्रतिदिन प्रमादशून्य रक्षा करने वाले बनाओ।

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो निवर्त्तताम् ।
देवानां सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ।।२५।।

हे भगवान् ! सरलता से आचरण करने वाले विद्वानों की कल्याण करने वाली अच्छी बुद्धि हमें प्राप्त हो और विद्वानों का विद्यादि दान प्राप्त हो, विद्वानों के मित्र भाव को हम प्राप्त हों जिससे कि देवता लोग हमारी आयु को दीर्घकाल पर्यन्त जीने के लिए बढ़ावें।

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।।२६।।

हम लोग ऐश्वर्यशाली, चर और अचर जगत् के पति, बुद्धि से प्रसन्न करने वाले परमात्मा की अपनी रक्षा के लिए, स्तुति करते हैं। जैसे कि वह पोषक धनों की वृद्धि के लिए, सामान्यतया और विशेषतया रक्षक कार्यों का साधक परमात्मा कल्याण के लिये हो, वैसे ही हम स्तुति करते हैं।

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।२७।।

बहुत कीर्ति वाला परमैश्वर्ययुक्त ईश्वर हमारे लिए कल्याण को धारण करे और सर्व पोषक, सर्व ज्ञाता ईश्वर हमारे लिए कल्याण को धारण करे, तीक्ष्ण तेजस्वी दुःखहर्ता ईश्वर हमारा कल्याण करे। बड़े-बड़े पदार्थों का पति हमारे लिए कल्याणकारी हो।

भद्रं कर्णेभिःश्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।।२८।।

हे संग करने वाले विद्वानों ! हम कानों से कल्याणकर सुनें, नेत्रों से कल्याणकर देखें। दृढ़ अंगों से आपके स्रोता हम लोग शरीरों से विद्वानों के लिए कल्याणकारी जो आयु है उसको भली भाँति प्राप्त करें।

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
नि होता सत्सि बर्हिषि ।।२९।।

हे प्रकाशस्वरुप परमात्मन् ! कान्ति-तेज विशेष के लिए प्रशंसित हुए आप देवताओं के लिए हव्य देने को प्राप्त होइये, सब पदार्थों के ग्रहण करने वाले आप यज्ञादि शुभ कार्यों में स्मरणादि द्वारा हमारे हृदयों में स्थित होइये।

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः । देवेभिर्मानुषे जने ।।३०।।

हे पूजनीयेश्वर ! तुम छोटे बड़े सब यज्ञों के उपदेष्टा हो। विद्वान् लोगों से विचारशील मनुष्यों में भक्ति आदि से तुम स्थित किये जाते हो।

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे।।३१।।

तीन सात अर्थात् इक्कीस द्रव्य सब चराचरात्मक वस्तुओं को पुष्ट करते हुए परिवर्तित हो रहे हैं। उनके सम्बन्धी बलों को वेद वाणी का स्वामी परमात्मा आज मेरे शरीर में धारण करे।

।। इति स्वस्तिवाचनम् ।।

अथ शान्तिकरणम्

ओ३म् शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ।।१।।

विद्युत एवं अग्नि हमें शान्तिप्रद हों। जीवनोपयोगी जल एवं विद्युत हमें शान्तिप्रद हों। विद्युत एवं ओषधि, बलवर्धक अन्न हमें शान्तिदायक हों।

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः ।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ।।२।।

प्रशंसा पाकर हम विनम्र बनें। ऋतम्भरा प्रज्ञा के हम स्वामी होवें। धनैश्वर्यों के हम स्वामी होवें। सत्योपदेश से हमें शान्ति मिले।

शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरुची भवतु स्वधाभिः ।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ।।३।।

धाता और पोषकवर्ग शान्तिदाता हों। वसुन्धरा अन्नादि पदार्थों की उपलब्धि से हमें शान्ति दे। विशाल द्यौ एवं पृथिवी शान्ति दें। मेघ व पर्वत हमें शान्तिप्रद हों। विद्वानों के मधुर उपदेश हमें आह्लादकारी हों।

शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम् ।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभिवातु वातः ।।४।।

ज्ञानयुक्त विद्वान, उपदेशक, आचार्य हमें शान्तिप्रद हों। सुकर्मियों के सुकृत हमें शान्ति पहुँचावें। समाज में चतुर्दिक वातावरण सुखकारी हो।

शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु ।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ।।५।।

पूर्व के समान सूर्य, भूमि, खुला आकाशमण्डल, वनौषधियां रोगशामक हों।

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरूणः सुशंसः ।
शं नो रुद्रो रूद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टाग्नाभिरिह श्रृणोतु ।।६।।

ज्ञान प्रकाशक आचार्य ब्रह्मचारियों सहित हमें शान्ति मन्त्रदाता हो। आठों वसु हमें शान्तिप्रद हों। सुनाम प्रशंसनीय विद्वान, सदसद्विवेकी पुरुष अपनी वाणियों से हमें शान्तिदायक हों।

शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः ।
शं नः स्वरुणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः ।।७।।

औषधिवर्ग स्वास्थ्यप्रद हो, अन्न हमें बलदायक हों। हम कर्मों की मर्यादा के ज्ञाता और पालक होवें। हमारा कार्यक्षेत्र हमें शान्तिप्रद हों।

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु ।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ।।८।।

हम अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि जल सम्बन्धी उपद्रवों से सदा बचे रहें।

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ।।६।।

अखण्ड प्रकृति माता अपने भौतिक नियमों से हमें शान्तिदायक हों अर्थात् हम प्राकृतिक नियमों को समझकर उससे यथावत उपकार ग्रहण करें।

शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः ।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः ।।१०।।

प्रकाशमान सूर्य हमें शान्तिप्रद हो। उषाएं हमारे लिए शीतल शान्तिप्रद हों। हमारे कृषक भांग आदि नशीली वस्तुएं न उगाकर स्वास्थ्यप्रद पदार्थों की ही वृद्धि करें।

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः ।।११।।

शुभ गुणों के दाता विद्वान (विश्वदेव), वेदज्ञान के साथ ज्ञान–कर्म रुपी सन्तति हमें प्रदान करें, आकाश, पृथ्वी एवं जलस्थ पदार्थ हमें शान्ति प्रदान करें।

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः ।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ।।१२।।

सत्यमानी, सत्यवक्ता एवं सत्यकर्ता विद्वान न्यायाधीश, धर्मानुसार, यथायोग्य, प्रीतिपूर्वक व्यवहार करने वाले हमें शान्तिप्रद हों। वैज्ञानिक विश्वकर्मा (इन्जीनियर) सुहस्त (कारीगर) तथा रक्षकवर्ग हमें शान्तिप्रद हों।

शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः ।
शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा ।।१३।।

सारे जगत को अपने एकपद में रखने वाला परमेश्वर सत्य विद्याओं का बोधक परमेश्वर, प्रलय के पश्चात् परमाणुओं का गतिप्रदाता परमेश्वर, सब प्राणिमात्र का आश्रयभूत परमेश्वर हमें शान्तिकारक हो।

इन्द्रो विश्वस्य राजति। शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ।।१४।।

सकलैश्वर्ययुक्त ईश्वर के राज्य में हम सब प्राणि तीनों तापों से मुक्त होकर शान्त विचरण करें।

शं नो वातः पवतां शं नस्तपतु सूर्य्यः ।
शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभि वर्षतु ।।१५।।

गरजने वाले मेघ भी हमारे ऊपर व हमारे खेतों को लहलहाने के लिए घिर-घिर कर बरसें।

अहानि शं भवन्तु नः शं रात्रीः प्रति धीयताम् ।
शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः ।।१६।।

दिन में हमें शान्ति का प्रकाश मिले रात्रि में शान्ति की स्तब्धता। हमारे कर्म शान्ति धारक (मर्यादित) हों। सूर्य व जल हमें शान्तिप्रद हों।

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः ।।१७।।

अभिलषित सुख की सिद्धि एवं पूर्णानन्द की प्राप्ति हेतु हे सर्वव्यापक प्रभु आप अपनी दिव्य शक्ति एवं आपःशक्ति से हम पर चारों ओर से बरसो।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।१८।।

जैसे द्यौ लोक, पृथिवी, जल, औषधि, वनस्पति, ब्रह्म, विश्वदेव (विद्वान) और शान्ति सब शान्त (समन्वित) हैं वैसे ही हमारे हृदय भी शान्त हों।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।।१६।।

ईश्वर सबका द्रष्टा एवं पथप्रदर्शक सर्वसामर्थ्ययुक्त रुप से आदिकारण के रुप में सदा वर्त्तमान है। वह प्रकृति से पृथक रहता हुआ सदा क्रियाशील है। हम अपनी प्रत्येक क्रिया, चेष्टा हेतु सौ वर्ष तक उसे आदर्श रुप में देखते हुए जीवन यापन करें। उसी के गुणगान सौ वर्षों तक कहें व सुनें। सौ वर्षों के बाद भी उसी प्रकार अदीन होकर जीवें।

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति । दूरगङ्मं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।२०।।

आत्म ज्ञान का साधन, ज्ञान कर्म आदि इन्द्रियों का अध्यक्ष सोते जागते हुए क्रियाशील रहने वाला, सब इन्द्रियों का एकमात्र प्रकाशक मेरा यह मन, हे प्रभु ! तेरे अनुग्रह से सदा उत्तम विचारों संकल्पों से युक्त होवे।

येन कर्माण्यपसो मनीषिणों यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः । यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।२१।।

सदसद्विवेकी शुभ कर्मानुष्ठान के समय जैसे मन से काम लेते हैं तथा भीषण संघर्ष की स्थिति में भी जिस मन की सहायता

से क्षोभरहित रहते हैं, हे सर्व द्रष्टा प्रभु मेरा वह मन शुभ संकल्प वाला होकर मेरे यज्ञ पूर्ण सफल हों।

यत् प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु ।
यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।२२।।

मन ही बोध, सम्बोध, धारणावती बुद्धि तथा धैर्य का कारण है। इसके बिना किसी प्रकार का ज्ञान सम्भव नहीं है। वह मेरा मन, हे अमृत प्रभो ! शान्त संकल्प वाला होवे।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।२३।।

भूत, वर्तमान और भविष्य का ग्रहण यह मेरा मन बिना ज्ञान कर्मेन्द्रियों की सहायता के कराता है। जिसके द्वारा सात होताओं (प्रत्यक्ष, धारण, विवेचन, तुलनाकरण, सम्मेलनीकरण, निष्कर्षीकरण तथा विचार निर्माण) वाला यज्ञ किया जाता है वह मेरा मन शुभ विचारों वाला होवें।

यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः ।
यस्मिंश्चित्तँ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।२४।।

जिस मन में साहित्य रचना की तीनों शैलियां (ऋग्यजुस्साम) विशेष रूप में स्थित हैं, जो समस्त प्राणियों की सारी चेतना का आगार है, हे चिद्रूप प्रभो ! आपकी कृपा से मेरा वह मन सत्य-धर्म से मर्यादित विचारों वाला हो।

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव ।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।२५।।

वेगवान घोड़ों की नकेल थामने वाले रथी के समान जो हृदय में प्रधानता से स्थित है। सदा युवा अत्यन्त वेगवान वह मेरा मन शान्त व्यापार वाला होवें।

स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते।
शं राजन्नोषधीभ्यः ।।२६।। साम० उत्तरा० प्रपा० १। मं० ३।।

हे सर्वोपरि विराजमान परमात्मन् हमें पवित्र बनाओ। जनसाधारण के लिए शान्ति प्रदान करो। गौ, अश्व और मनुष्यों से हमें शान्ति प्राप्त होवें।

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे ।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ।।२७।।

अन्तरिक्ष, द्यौलोक और पृथ्वी तीनों लोकों में हम निर्भय होकर विचरें। हमको कहीं से भी किसी प्रकार का भय न हो।

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात् ।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ।।२८।।

हमें मित्र, शत्रु, परिचित, अपरिचित, परोक्ष, प्रत्यक्ष, दिन और रात्रि सभी से पूर्ण अभय की प्राप्ति हो। सभी दिशाएं (या

दिशाओं में रहने वाले) व्यक्ति या पदार्थ मेरे मित्र हों ताकि सर्वत्र निर्भय होकर विचरण करूँ।

।। इति शान्तिकरणम् ।।

पूर्णमासी की आहुतियां

ओ३म् अग्नये स्वाहा ।।१।। ओ३म् अग्नीषोमाभ्याम् स्वाहा ।।२।। ओ३म् विष्णवे स्वाहा ।।३।।

अमावस्या की आहुतियां

ओ३म् अग्नये स्वाहा ।।१।। ओ३म् इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा ।।२।। ओ३म् विष्णवे स्वाहा ।।३।।

पितृ यज्ञ

अग्निहोत्र की विधि पूर्ण करके तीसरा यज्ञ पितृयज्ञ करे अर्थात् जीवित माता-पिता आदि की यथावत् सेवा करे यही 'पितृयज्ञ' कहलाता है।

बलिवैश्वदेव यज्ञ विधि

निम्नलिखित १० मन्त्रों से घृत के पात्र में शक्कर आदि मिला कर बलिवैश्वदेव यज्ञ के निमित्त आहुति दें:-

ओ३म् अग्नये स्वाहा ।।१।। ओ३म् सोमाय स्वाहा ।।२।। ओ३म् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ।।३।। ओ३म् विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ।।४।। ओ३म् धन्वन्तरये स्वाहा ।।५।। ओ३म् कुह्वै स्वाहा ।।६।। ओ३म् अनुमत्यै स्वाहा ।।७।। ओ३म् प्रजापतये स्वाहा ।।८।। ओ३म् द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ।।९।। ओ३म् स्विष्टकृते स्वाहा ।।१०।।

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों से बलि का दान करें :-

ओ३म् सानुगायेन्द्राय नमः। इससे पूर्व।। **ओ३म् सानुगाय यमाय नमः।** इससे दक्षिण।। **ओ३म् सानुगाय वरूणाय नमः।** इससे पश्चिम।। **ओ३म् सानुगाय सोमाय नमः।** इससे उत्तर।। **ओ३म् मरूद्भ्यो नमः।** इससे द्वार।। **ओ३म् अद्भ्यो नमः।** इससे जल।। **ओ३म् वनस्पतिभ्यो नमः।** इससे मूसल और ऊखल।। **ओ३म् श्रियै नमः।** इससे ईशान।। **ओ३म् भद्रकाल्यै नमः।** इससे नैऋत्य।। **ओ३म् ब्रह्मपतये नमः। ओ३म् वास्तुपतये नमः।** इससे मध्य।। **ओ३म् विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ओ३म दिवाचरेभ्योभूतेभ्यो नमः। ओ३म् नक्तंचारिभ्यो भूतेभ्यो नमः।** इससे ऊपर।। **ओ३म् सर्वात्मभूतये नमः।** इससे पृष्ठ।। **ओ३म् पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधाभ्यः नमः।** इससे दक्षिण दिशा में बलि का दान करें।

(ऋग्वेद का अन्तिम सूक्त)

संगठन सूक्त

सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इडस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर ।।१।।

हे प्रभो तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिये धन वृष्टि को।।१।।

संगच्छध्वं संवदध्वं स वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ।।२।।

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो।।२।।

समानो मन्त्रः समितिः समानी, समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभिमंत्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।।३।।

हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूं बराबर भोग्य पा सब नेक हों।।३।।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहाति ।।४।।

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हो प्रेम से जिससे बढ़ें सुख सम्पदा।।४।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग् भवेत् ।।५।।

सबका भला करो भगवान् सब पर दया करो भगवान्।
सबकी व्यथा हरो भगवान् सबका सब विधि हो कल्याण।।

हे ईश सब सुखी हों कोई न हो दुखारी।
सब हों निरोग भगवन् धनधान्य के भण्डारी।।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे सृष्टि में प्राणधारी।।

शान्ति-मन्त्र

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

वैदिक-विनय

ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तु अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् । अपघ्नन्तो अराव्णः ।

हे प्रभु ! हम तुमसे वर पावें। अखिल विश्व को आर्य बनावें।।
पावें सुख-सम्पति फैलावें, आप बढ़ें तब राज्य बढ़ावें।
वैर विघ्न को मार मिटावें, प्रीति-नीति की रीति चलावें।।

सदुद्देश्य

सब वेद पढ़ें, सुविचार बढ़ें,
बल पाय चढ़ैं नित ऊपर को।
अविरुद्ध रहें, ऋजु पन्थ गहें
परिवार कहें वसुधा भर को।।
ध्रुव धर्म धरें पर-दुःख हरें
तन त्याग तरें भव-सागर को।
दिन फेर पिता वर दे सविता
हम आर्य करें वसुधा भर को।।

यज्ञ-प्रार्थना-१

पूजनीय प्रभो ! हमारे भाव उज्जवल कीजिए।
छोड़ देवें छल-कपट को, मानसिक बल दीजिए।।१।।

वेद की गावें ऋचायें, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक-सागर से तरें।।२।।

अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ पर-उपकार को।
धर्म-मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को।।३।।

नित्य श्रद्धा-भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें।।४।।

भावना मिट जाये मन से पाप अत्याचार की।
कामनायें पूर्ण होवें यज्ञ से नर नारि की।।५।।

लाभकारी हो हवन हर प्राणधारी के लिए।
वायु-जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किये।।६।।

स्वार्थ-भाव मिटे हमारा प्रेम-पथ विस्तार हो।
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।।७।।

हाथ जोड़ झुकाय मस्तक वन्दना हम कर रहे।
'नाथ' करुणा-रुप करुणा आपकी सब पर रहे।।८।।

यज्ञ-प्रार्थना-२

यज्ञ जीवन का हमारे श्रेष्ठ सुन्दर कर्म है।
यज्ञ का करना कराना आर्यों का धर्म है।।१।।

यज्ञ से दिशि हो सुगन्धित शान्त हो वातावरण।
यज्ञ से सद्ज्ञान होवे, यज्ञ से शुद्धाचरण।।२।।

यज्ञ से हो शुद्ध काया व्याधियाँ सब नष्ट हो।
यज्ञ से सुख संपदा हो दूर सारे कष्ट हो।।३।।

यज्ञ से दुष्काल मिटते यज्ञ से जल वृष्टि हो।
यज्ञ से धनधान्य हों बहुभाँति सुखमय सृष्टि हो।।४।।

यज्ञ है प्रिय मोक्ष दाता यज्ञ शक्ति अनूप है।
यज्ञमय यह विश्व है विश्वेश यज्ञ स्वरूप है।।५।।

यज्ञमय अखिलेश ऐसी आप अनुकम्पा करें।
यज्ञ के प्रति आर्य जनता में अमित श्रद्धा भरें।।६।।

यज्ञ पुण्य प्रताप से सब पाप ताप तिमिर हरें।।७।।
यज्ञ नौका से अगम संसार सागर से तरें।

मंगल–कामना

सुखी बसे संसार सब दुखिया रहे न कोय।
ये अभिलाषा हम सबकी भगवन पूरी होय।।१।।

विद्या–बुद्धि–तेज–बल, सबके भीतर होय।
दूध–पूत–धन–धान्य से वञ्चित रहे न कोय।।२।।

आपकी भक्ति प्रेम से मन होवे भरपूर।
राग–द्वेष से चित्त मेरा कोसों भागे दूर।।३।।

मिले भरोसा आप का हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की बनी रहे मम ईश।।४।।

पाप से हमें बचाइए करके दया दयाल।
अपनी भक्ति–प्रेम से सबको करो निहाल।।५।।

दिल में दया–उदारता मन में प्रेम अपार।
हृदय में धैर्य–वीरता सबको दो करतार।।६।।

हाथ जोड़ विनती करूँ सुनिये कृपानिधान।
साधु–संगत–सुख दीजिए, दया–नम्रता दान।।७।।

उद्‌बोधन

ईश्वर से संग जोड़, मानव ईश्वर से संग जोड़।
विषयों से मुख मोड़ मानव, विषयों से मुख मोड़।।

प्रातः सायं संध्या कर ले, वेद ज्ञान जीवन में भर ले।
शुभ कर्मों को न छोड़, मानव ईश्वर से ....

जिससे मानव पाप कमाता, जन्म मरण बन्धन में आता।
उस बाधक को छोड़ मानव, ईश्वर से ....

केवल धन संचय में रहना, विषय भोग सागर में बहना
ये अन्धों की दौड़ मानव, ईश्वर से ....

बिन ईश्वर के जाने माने, दूध और पानी के न छानें।
वृथा हैं यत्न करोड़ मानव, ईश्वर से ....

उद्यम कर ले छोड़ उदासी, जन्म जन्म पाप की राशि
पाप कलश को फोड़ मानव, ईश्वर से ....

क्यों फिरता है मारा मारा, ईश्वर का ले पकड़ सहारा।
ये है एक निचोड़ मानव, ईश्वर से ....

अब भी जो तू चेत न पाया, तो फिर तुझको ये जग माया।
देगी तोड़ मरोड़ मानव, ईश्वर से ....

स्वामी सत्यपति परिव्राजक

दिव्य कामना

हे प्रेममय प्रभो ! तुम्हीं सबके अधार हो।
तुमको परम पिता प्रणाम बार बार हो।।१।।

ऐसी कृपा करो कि हम सब धर्मवीर हों।
वैदिक पवित्र धर्म का जग में प्रचार हो।।२।।

सन्देश देश-देश में वेदों का दें सुना।
सद्भाव और प्रेम का सब में प्रसार हो।।३।।

असहाय के सहाय हों उपकार हम करें।
अभिमान से बचें हृदय निर्भय उदार हो।।४।।

फूलें फलें संसार में यह रम्य वाटिका।
कर्त्तव्य अपने का सदा हम में विचार हो।।५।।

स्वाधीनता के मन्त्र का जप हम सदा करें।
सेवा में मातृ-भूमि के तन-मन निसार हो।।६।।

आत्म निरीक्षण

ये उलझन किस विधि सुलझाऊँ
सब जग पूछे पिता कौन है, कैसे नाम बताऊँ !
नाम लिए बिन काम चले नां, नाम लेत सकुचाऊँ। ये....
ज्योति रूप है नाम तिहारो, दर्पण जो लख पाऊँ।
कारिख देख रूप अपने की, आँचल में छुप जाऊँ। ये....
द्यावा पृथिवी को तुम धारो, में तव पुत्र कहाऊँ।
मुझसे अपना आपन संभले, सोच यही शरमाऊँ। ये......
विश्व चराचर के तुम स्वामी, तुम्हारी थाह न पाऊँ।
मैं अधिपति हूँ पाप पुंज का, कैसे लाज बचाऊँ। ये......
नाम लिए भी जग न माने, सौ विश्वास दिलाऊँ।
वेद शास्त्र की देय दुहाई, मैं पीछा छुड़वाऊँ। ये ....

स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती

उपदेश

विश्वपति के ध्यान में जिसने लगाई हो लगन।
क्यों न हो उसको शान्ति क्यों न हो उसका मन मगन।।१।।
ऐसा बना स्वभाव को चित्त की शान्ति से तू।
पैदा न होवे ईर्ष्या मन में नहीं करे जलन।।२।।
मित्रता सबसे मन में रख त्याग दे वैर भाव को।
छोड़ दे टेढ़ी चाल को ठीक कर अपना चलन।।३।।
उससे अधिक न है कोई जिसने रचा है ये जगत।
उसका ही रख तू आसरा उसकी ही तू पकड़ सरन।।४।।
छोड़ के राग द्वेष को मन में उसी का ध्यान कर।
तुझपे दयालू होवेंगे निश्चय ही वो परमात्मन।।५।।
आप दया स्वरूप है आप ही का है आसरा।
कृपा की दृष्टि किजिए मुझपे हो जब समय कठिन।।६।।
मन में हो उसके चांद ना मोक्ष का रस्ता मिले।
मार के मन जो 'केवल' इन्द्रियों का करे दमन।।७।।

आनन्द स्रोत बह रहा पर तू उदास है।
अचरज है जल में रहके भी मछली को प्यास है।
फूलों में ज्यों सुवास ईख में मिठास है।
भगवान का त्यों विश्व के कण-कण में वास है।
टुक ज्ञान चक्षु खोल ज़रा देख तो सही।
जिसको तू ढूंढ़ता अरे वो तेरे पास है।
कुछ तो समय निकाल, आत्म शुद्धि के लिए।
नर जन्म का उद्देश्य न केवल विलास है।
आनन्द मोक्ष का न पा सकेगा तब तलक,
जब तलक तू **'प्रकाश'** इन्द्रियों का दास है।

प्रकाशचन्द्र कविरत्न

प्रीतम तेरे पास बांवरी, प्रीतम तेरे पास,
बार-बार पिया घर आये, लौट गये बिन ही बतलाये।
जब देखा तेरे घर अन्दर कूड़ा कंकड़ घास बांवरी........
तेरे प्रियतम के बलिहारी, अजर, अनन्त, अमर, अविकारी,
किसी वस्तु की नहीं चाहना, नही भूख ना प्यास बांवरी...
माया का आवरण उठाकर, इधर-उधर से ध्यान हटाकर,
एक चित्त हो देख उसी का घट-घट में आवास बांवरी....

उपदेश

उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहां जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है जो सोवत है सो खोवत है।।
टुक नींद से अंखियां खोल जरा और अपने प्रभु से ध्यान लगा।
यह प्रीत करन की रीत नहीं प्रभु जागत है तू सोवत है।।
जो कल करना सो अज कर ले जो अज करना सो अब कर ले।
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया फिर पछताये क्या होवत है।।
नादान भुगत करनी अपनी ओ पापी पाप में चैन कहाँ।
जब पाप की गठरी शीस धरी फिर शीस पकड़ क्यों रोवत है।।

शान्ति गीत

१. शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में। शान्ति कीजिये.........
जल में थल में और गगन में, अन्तरिक्ष में अग्नि पवन में।
ओषधि वनस्पति वन उपवन में, सकल विश्व में जड़ चेतन में।।
शान्ति कीजिये.........

२. ब्राह्मण के उपदेश वचन में, क्षत्रिय के द्वारा हो रण में।
वैश्य जनों के होवे धन में, और शूद्र के हो चरणन में।।
शान्ति कीजिये...........

३. शान्ति राष्ट्र निर्माण सृजन में, नगर ग्राम में और भवन में।
जीव मात्र के तन में मन में, और जगति के हो कण कण में।।
शान्ति कीजिये......

याजक के प्रति सुकामना

सदा फूलता फलता भगवन! यह याजक परिवार रहे।
रहे प्यार जो किसी से इनका-पर सदा आपसे प्यार रहे।
मिथ्या कर अभिमान कभी न जीवन का अपमान करे,
देवजनों की सेवा करके वेदामृत का पान करे।
प्रभो! आपकी आज्ञा पालन करता हर नरनार रहे।।
मिले सम्पदा जो भी इनको, उसको मानें आपकी,
घड़ी न आने पावे इनपे-कोई भी सन्ताप की।
यही कामना प्रभो ! आपसे कर हम बारम्बार रहे,
दुनियादारी रहे चमकती, धर्म निभाने वाले हों,
सेवा के साँचे में सबने जीवन अपने ढाले हों।
बच्चा बच्चा परिवार का बनकर श्रवण कुमार रहे।
बने रहें सन्तोषी सारे जीवन के हर काल में।
हाल चाल हो कैसा इनका, रहें मस्त हर हाल में।
ताकि "देश" बसाया, इनका सुखदाई संसार रहे।

महर्षि दयानन्द के प्रति

श्रद्धांजलि–१

ऐ दुनिया बता इससे बढ़कर फिर और हकीकत क्या होगी।
जाँ देदी तलाशे हक् के लिए फिर और इबादत क्या होगी।

यों तो हर रात की तारीकी देती है पयाम उजाले का।
जिससे ये जहाँ पुरनूर हुआ उस रात की कीमत क्या होगी।

जहरें भी पिलाई अपनों ने, खंजर भी चलाये अपनों ने।
अपनों के ही अहसाँ क्या कम थे गैरों से शिकायत क्या होगी।

औरों के लिए मरने वाले मर के भी हमेशा जीते हैं।
जिस मौत पे दुनियाँ रश्क करे उस मौत की अजमत क्या होगी।

सदियों की ख़िजां के बाद खिला इक फूल उसे भी तोड़ दिया।
कलियों के मसलने वालों से फूलों की हिफाजत क्या होगी।

चमूपति

श्रद्धांजलि–२

नादान लोगों ने उस योगी का भेद ना पाया।
कोई कहे मत आ इस द्वारे
विष दाता कह पत्थर मारे
क्या जाने किस्मत के मारे
सुधा कलश ले आया। नादान..............
गाली देते नहीं लजाए
विष का प्याला लेकर आये
योगी मेरा प्रेम दिवाना
सुधा कलश ले आया। नादान..............
रोम–रोम बन फोड़ा बोला
सेवा के कारण था चोला
खूब करी प्यारे ने लीला
जिसका उसे चढ़ाया। नादान...............
रोम–रोम का बना फुहारा
फूट चली अमृत की धारा
एक बूंद ने नास्तिक मुनि का
सारा मोह बहाया। नादान..................
बार बार नर जीवन पाऊँ
बार बार बलिदान चढ़ाऊँ
ऋण तो भी मुझसे ऋषि तेरा
जावे नहीं चुकाया। नादान..................

स्वामी समर्पणानन्द

आरती

ओ३म् जय जगदीश हरे, पिता जय जगदीश हरे।
भक्त जनन के संकट क्षण में दूर करे।।१।।

जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनशे मन का।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तनका।।२।।

माता पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किस की।
तुम बिन और न दूजा, आस करुं जिसकी।।३।।

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
परब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी।।४।।

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्त्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्त्ता।।५।।

तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति।
किस विध मिलूं दयामय, दीजो वह सुमति।।६।।

दीनबन्धु दुःखहर्त्ता, तुम रक्षक मेरे।
करुणाहस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा तेरे।।७।।

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।।८।।